॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥प्रश्नोत्तर मणि रत्नमाला॥

विषय सूची

॥ प्रश्नोत्तर मणि रत्नमाला ॥ 3

भवदीय :

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥

॥ श्री हरि ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ प्रश्नोत्तर मणि रत्नमाला ॥

श्रीमद भगवत पूज्यपाद आद्य शङ्कराचार्य प्रणीतम्

अपारसंसारसमुद्रमध्ये संमजतो मे शरणं किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपया वदैतद्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका ॥ १॥

हे दयामय गुरुदेव! कृपा करके यह बताइये कि इस संसाररूपी अपार समुद्र में मुझ डूबते हुए के लिये कौनसा आश्रय है ? उत्तर- सम्पूर्ण विश्वके प्रभु श्रीपरमात्माका चरणकमलरूपी जहाज (नौका)।

बद्धो हि को यो विषयानुरागी, का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः ॥ को वास्ति घोरो नरकः खदेहः, तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति ॥२॥

प्रश्न: कौन व्यक्ति वास्तव में बँधा हुआ है ?
उत्तर: जो विषयों में आसक्त है।
प्रश्न: विमुक्ति क्या है ?
उत्तर: विषयो में वैराग्य ।

प्रश्न: घोर नरक कौन सा है ?
उत्तर: अपना शरीर ।
प्रश्न: स्वर्ग का पद क्या है ?
उत्तर: तृष्णा का नाश होना।

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः, को मोक्षहेतुः कथितः स एव ॥
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी, का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ॥३॥

प्रश्न: संसार के भय को हरनेवाला कौन है ?
उत्तर: वेदसे उत्पन्न हुआ आत्मज्ञान।
प्रश्न: मोक्ष का कारण क्या है ?
उत्तर: वही आत्मज्ञान ।
प्रश्न: नरक का प्रधान द्वार क्या है ?
उत्तर: नारी।
प्रश्न: स्वर्ग को देने वाली कौन है ?
उत्तर: सब प्राणियों की अहिंसा (किसी प्रकार भी पीड़ा न पहुँचाना)।

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो, जागर्ति को वा सदसद्विवेकी ।
के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि, तान्येव मित्राणि जितानि यानि ॥४॥

प्रश्न: वास्तव में कौन सुख से सोता है ?
उत्तर: वही व्यक्ति जो परमात्मा के स्वरूप में स्थित है।
प्रश्न: कौन जागता है ?

उत्तर: जिसको सत् और असत् का ज्ञान है।

प्रश्न: शत्रु कौन हैं ?

उत्तर: अपनी इन्द्रियां । परन्तु यदि वश में रक्खी जायँ तो वेही मित्र का काम करती हैं।

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः, श्रीमाँश्च को यस्य समस्ततोषः ।
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः, को वाऽमृतः स्यात्सुखदा निराशा
॥५॥

प्रश्न: दरिद्र कौन है ?

उत्तर: जिसकी तृष्णा बढ़ी हुई है।

प्रश्न: धनवान कौन है ?

उत्तर: जिसे सब प्रकार से संतोष है ।

प्रश्न: वास्तव में जीते जी मरा हुआ कौन है ?

उत्तर: जो पुरुषार्थहीन अथवा निरुद्रामी है।

प्रश्न: अमृत क्या है ?

उत्तर: सुख देनेवाली निराशा। आशा से रहित होना ही वास्तव में अमृत है।

पाशो हि को यो ममताभिमानः, सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री।
को वा महान्धो मदनातुरो यो, मृत्युश्च को वाऽपयशः स्वकीयम् ॥६॥

प्रश्न: वास्तव में क्या फाँसी है ?

उत्तर: जो "मैं" और "मेरा' रूप ममता का अभिमान है।

प्रश्न: मदिरा के समान कौन सी वस्तु निश्चय ही मोहित कर देती है?

उत्तर: नारी।

प्रश्न: महान् अन्धा कौन है ?

उत्तर: जो कामपीड़ा से व्याकुल है।

प्रश्न: मृत्यु क्या है ?

उत्तर: अपना अपयश ।

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा, शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव ।
को दीर्घरोगो भव एव साधो, किमौषधं तस्य विचार एव ॥ ७॥

प्रश्न: गुरु कौन है ?

उत्तर: जो केवल हितकाही उपदेश दे।

प्रश्न: शिष्य कौन है ?

उत्तर: जो गुरुभक्त हो।

प्रश्न: गुरुदेव ! बड़ा भारी रोग कौनसा है ?

उत्तर: हे साधु ! बारंबार जन्म लेना ही सबसे बड़ा रोग है।

प्रश्न: उसकी औषधि क्या है ?

उत्तर: परमात्मा के स्वरूप का विचार वा मनन करना ।

किं भूषणाद्भूषणमस्ति शीलं, तीर्थ परं किं स्वमनो विशुद्धम्।
किमत्र हेयं कनकं च कान्ता, श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम् ॥८॥

प्रश्न: भूषणों में उत्तम भूषण कौनसा है ?

उत्तर: उत्तम चरित्र अथवा शीलवत।

प्रश्न: सबसे उत्तम तीर्थ कौनसा है ?

उत्तर: विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ अपना मन ।

प्रश्न: इस संसार में कौन सी वस्तु त्यागने योग्य है ?

उत्तर: काञ्चन (सोना) और भामिनी (स्त्री)।

प्रश्न: सदा मन लगाकर सुनने योग्य क्या है ?

उत्तर: वेद और गुरु का वचन।

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति, सत्सङ्गतिर्दानविचारतोषा।
के सन्ति सन्तोऽखिलवीतरागा, अपास्तमोहाः शिवतत्त्वनिष्ठाः ॥९॥

प्रश्न: परमात्मा की प्राप्ति के साधन कौन से हैं ?

उत्तर: ब्रह्मनिष्ट पुरुषों का संग, सात्विक दान, परमेश्वर के स्वरूपका मनन और सन्तोष ।

प्रश्न: महात्मा कौन है ?

उत्तर: संसार के भोगों में जिनकी आसक्ति नहीं है, जिनका अज्ञान नष्ट हो चुका है और जो कल्याणरूप परमात्मतत्त्व में स्थित हैं।

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता, मूर्खाऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः।
कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् ॥१०॥

प्रश्न: प्राणियों के लिये वास्तविक ज्वर कौनसा है ?

उत्तर: चिन्ता ।

प्रश्न: मूर्ख कौन है ?
उत्तर: जो विचारहीन है।
प्रश्न: करने योग्यप्रिय क्रिया कौन सी है?
उत्तर: शिव और विष्णु की भक्ति।
प्रश्न: असली जीवन कौन सा है ?
उत्तर: जो सर्वथा निर्दोष है।

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या, बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै, जितं जगत्केन मनो हि येन ॥११॥

प्रश्न: वास्तव में विद्या किसका नाम है ?
उत्तर: जो ब्रह्मगति (परमात्मा) को प्राप्त करा देनेवाली हो।
प्रश्न: वास्तव में ज्ञान कौनसा है ?
उत्तर: वही जो मुक्ति का साधन है।
प्रश्न: यथार्थ लाभ क्या है ?
उत्तर: आत्मतत्व की प्राप्ती।
प्रश्न: जगत को किसने जीता ?
उत्तर: जिसने मन को जीत लिया।

शरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा, मनोजबाणैयथितो न यस्तु। प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा, प्राप्तो न मोह ललनाकटाचैः ॥१२॥

प्रश्न: वीरो मैं सब से बड़ा वीर कौन है?
उत्तर: जो कामबाणों से पीडित नहीं होता।

प्रश्न: बुद्धिमान, समदर्शी और धीरपुरुष कौन है?
उत्तर: जो स्त्रियों के कटाक्षों से मोह को नहीं प्राप्त होता ।

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ता, दुःखी सदा को विषयानुरागी ।
धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारी, कः पूजनीयः शिवतत्वनिष्ठः ॥१३॥

प्रश्न: सबसे भारी विष कौन सा है।
उत्तर: सारे विषय भोग।
प्रश्न: सदा दुःखी कौन रहता है ?
उत्तर: जो विषयों के भोग में आसक्त है।
प्रश्न: धन्य कौन है ?
उत्तर: जो परोपकारी है।
प्रश्न: पूजनीय कौन है?
उत्तर: कल्याणरूप परमात्म तत्व में स्थित महात्मा।

सर्वास्ववस्थास्वपि किं न कार्य, किं वा विधेयं विदुषा प्रयत्नात् ।
स्नेहं च पापं, पठनं च धर्म , संसारमूलं हि किमस्ति चिन्ता ॥१४॥

प्रश्न: भली बुरी सब प्रकार की अवस्थाओं में विद्वानों को कौनसा काम नहीं करना चाहिये और कौनसा काम प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये ?
उत्तर: संसारस्नेह तथा पाप नहीं करना चाहिये। सर्वदा सद्ग्रन्थों का पठन और धर्मका पालन करना चाहिये।
प्रश्न: संसारका मूल कौन है।

उत्तर: चिंता।

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा, नार्या पिशाच्या न च वञ्चितो यः।
का शृङ्खला प्राणभृतां हि नारी, दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम्
॥१५॥

प्रश्न: विचारवानों में सबसे अधिक विचारशील कौन है ? उत्तर: जो स्त्रीरूप पिशाचिनी से नहीं ठगा गया है।
प्रश्न: प्राणियोंके लिये साकल (बंधन) क्या है?
उत्तर: नारी।
प्रश्न: श्रेष्ठ व्रत कौन सा है ?
उत्तर: पूर्णरूप से दैन्यभाव !

ज्ञातुं न शक्यं च किमस्ति सर्वे, यषिन्मनो यच्चरितं तदीयम् ।
का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा, विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा ॥१६॥

प्रश्न: क्या जानना सबसे लिये सम्भव नहीं है ?
उत्तर: स्त्री का मन और उसका चरित्र।
प्रश्न: सबलोगों के लिये किसका त्याग करना कठिन है ? उत्तर: बुरी वासना का, विषय भोग और पाप की इच्छाओं का प्रश्न: पशु कौन है ?
उत्तर: जो सद्विद्या से रहित अर्थात मूर्ख है !

वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयो, मूर्खश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः। मुमुक्षुणा
किं त्वरितं विधेयं, सत्सङ्गतिर्निर्ममतेशभक्तिः ॥ १७ ॥

प्रश्न: किन २ के साथ निवास और सङ्ग नहीं करना चाहिये ? उत्तर: मूर्ख, नीच, दुष्ट और पापियों के साथ।

प्रश्न: मुक्ति चाहनेवालों को कौन सा काम अतिशीघ्र करना चाहिये?

उत्तर: सत्सङ्ग (ब्रह्मनिष्ठ पुरुषोंका सङ्ग), ममता का सर्वथा त्याग और परमेश्वर की भक्ति।

लघुत्वमूलं च किमर्थितैव, गुरुत्वमूलं यदयाचनं च ।
जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म, को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः ॥१८॥

प्रश्न: छोटेपन की जड़ क्या है ?

उत्तर: याचना।

प्रश्न: बड़प्पन की जड क्या है ?

उत्तर: कुछ भी नहीं मांगना ।

प्रश्न: किसका जन्म सराहनीय है?

उत्तर: जिसका फिर जन्म न हो।

प्रश्न: किसकी मृत्यु सराहनीय है?

उत्तर: जिसकी फिर मृत्यु नही होती ।।

मूकोऽस्ति को वा बधिरश्च को वा वक्तुं न युक्तं समये समर्थः।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्य विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी ॥१९॥

प्रश्न: गूंगा कौन है ?
उत्तर: जो समयपर उचित वचन कहने में असमर्थ है।
प्रश्न: बहिरा कौन है ?
उत्तर: जो यथार्थ और हितकर वचन नहीं सुनता।
प्रश्न: विश्वासके योग्य कौन नहीं है ?
उत्तर: नारी ।

तवं किमेकं शिवमद्वितीयं, किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव, सम्यग्देयं परं किंत्वभयं सदैव ॥२०॥

प्रश्न: एकमात्र तत्त्व कौन सा है ?
उत्तर: अद्वितीय कल्याण तत्त्व (परमात्मा)।
प्रश्न: सबसे उत्तम क्या है ?
उत्तर: सदाचरण।
प्रश्न: कौन सा सुख त्याग देना चाहिये ?
उत्तर: सब प्रकार का स्त्री का सुख।
प्रश्न: देने योग्य उत्तमदान कौन सा है?
उत्तर सदा अभयदान।

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा कामः सकोपानृतलोभतृष्णः।
न पूर्यते को विषयैः स एव किं दुःखमूलं ममताभिधानम् ॥ २१ ॥

प्रश्न: शत्रुओं में सबसे बड़ा शत्रु कौन है ?

उत्तर: क्रोध, झूठ, लोभ और तृष्णासहित काम।
प्रश्न: विषय भोगों से कौन तृप्त नहीं होता ?
उत्तर: वही काम।
प्रश्न: दुःख की जड़ क्या है ?
उत्तर: ममतानामक दोष ।

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य, सत्यं च किं भूतहितं सदैव।
किं कर्म कृत्वा न हि शोचनीयं कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम् ॥२२॥

प्रश्न: मुख का भूषण क्या है ?
उत्तर: विद्वत्ता ।
प्रश्न: सच्चा कर्म क्या है ?
उत्तर: सर्वदा प्राणियों का हित करना।
प्रश्न: कौनसा काम करके पछताना नहीं पड़ता?
उत्तर: कामके शत्रु शिव और कंसके शत्रु श्रीकृष्ण का पूजनरूप कर्म ।

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः, क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ।
शल्यं परं किं निजमूर्खतैव, के के छुपाया गुरुदेववृद्धाः ॥२३॥

प्रश्न: किस के नाश से मोक्ष की प्राप्ति होती है ?
उत्तर: मन के।
प्रश्न: किस स्थिति में सर्वथा भय नहीं है ?
उत्तर: मोक्ष में।

प्रश्न: सब से अधिक चुमनेवाली कौन सी चीज है ?
उत्तर: अपनी मूर्खता ।
प्रश्न: उपासना के योग्य कौन हैं ?
उत्तर: देवता, गुरु और वृद्धपुरुष ।

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते, किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात् ।
वाकायचित्तैः सुखदं यमघ्नं, मुरारिपादाम्बुजचिन्तनं च ॥ २४ ॥

प्रश्न: प्राण हरनेवाले काल के उपस्थित होने पर बुद्धिमानों को कौनसा काम शीघ्र ही प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये ?
उत्तर: सुख देनेवाले और मृत्यु का नाश करनेवाले भगवान् मुरारि के चरण कमल का तन मन वचन से चिन्तन करना ।

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः, कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः ।
मातेव का या सुखदा सुविद्या, किमेधते दानवशात्सुविद्या ॥२५॥

प्रश्न: डाकू कौन है ?
उत्तर: बुरी वासनाएं।
प्रश्न: सभा में कौन शोभा पाता है?
उत्तर: अच्छा विद्वान
प्रश्न: माता के समान सुख देनेवाली कौन है ?
उत्तर: सुविद्या ।

प्रश्न: देने से क्या बढती है ?

उत्तर: श्रेष्ठ विद्या।

कुतो हि भीतिः सततं विधेया, लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
को वातिबन्धुः पितरश्च को वा, विपत्सहायाः परिपालका ये ॥२६॥

प्रश्न: निरन्तर किससे डरना चाहिये ?

उत्तर: लोकनिन्दासे और संसाररूपी कानन से ।

प्रश्न: अपना प्रिय बन्धु कौन है ?

उत्तर: जो विपत्ति में सहायक हो ।

प्रश्न: पिता कौन है ?

उत्तर: जो भली प्रकार पालन पोषण करे !

बुद्धा न बोध्यं परिशिष्यते किं, शिवप्रसादं सुखबोधरूपम् ।
ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या, त्सर्वात्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे ॥२७॥

प्रश्न: क्या समझने के बाद कुछ भी समझना बाकी नहीं रहता?

उत्तर: शुद्ध, ज्ञानमय, आनन्दमय और कल्याणमय परमात्मा को।

प्रश्न: किसको जान लेनेपर जगत् जाना जाता है?

उत्तर: सर्वात्मरूप पूर्ण ब्रह्म के स्वरूप को ।।

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके, सत्सङ्गतिर्ब्रह्मविचारणा च ।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः, को दुर्जयः सर्वजनैर्मनोजः ॥२८॥

प्रश्न: संसार में क्या दुर्लभ है ?

उत्तर: सद्गुरु, सत्सङ्ग, ब्रह्मविचार, सर्वस्वत्याग और कल्याणरूप आत्मज्ञान ।

प्रश्न: किसको जीतना सबके लिये कठिन है ?

उत्तर: कामदेव को।

पशोः पशुः को न करोति धर्म | प्राधीतशास्त्रोऽपि न चात्मबोधः।
किं तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः ॥२९॥

प्रश्न: पशुओं सेभी बढ़कर पशु कौन है ?

उत्तर: शास्त्र का अच्छी तरह अध्ययन करके भी जो धर्म का पालन नहीं करता और जिसे आत्मज्ञान नहीं हुआ।

प्रश्न: वह कौनसा विष है जो अमृत सा जान पड़ता है?

उत्तर: स्त्री।

प्रश्न: वह कौन से शत्रु है जो मित्र से लगते है ?

उत्तर: पुत्रादि ।

विद्युज्ज्वलं किं धनयौवनायु दनं परं किञ्च सुपात्रदत्तम् ।
कण्ठं गतैरप्यसुभिर्न कार्य किं किं विधेयं मलिनं शिवाच ॥३०॥

प्रश्न: विजली की तरह क्षणिक क्या है ?

उत्तर: धन, यौवन (जवानी) और आयु ।

प्रश्न: सब से उत्तम दान कौन सा है ?

उत्तर: जो सुपात्र को दिया जाय।

प्रश्न: प्राणों के कण्ठ में आ जाने पर भी कौन काम ऐसा है जो नहीं करना चाहिये और कौन सा काम करना चाहिये ? ।

उत्तर: पाप नहीं करना चाहिये और कल्याणरूप परमात्मा की पूजा करनी चाहिये।

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं संसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम् ।
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः, कास्था न कार्या सततं भवाब्धौ ॥३१॥

प्रश्न: रातदिन विशेषरूप से किसका चिन्तन करना चाहिये ?

उत्तर: संसार के मिथ्यापन का और कल्याणरूप परमात्म तत्व का।

प्रश्न: वास्तव में कर्म क्या है ?

उत्तर: जो भगवान श्रीकृष्ण को प्रिय हो।

प्रश्न: किस में सदैव विश्वास नहीं करना चाहिये ?

उत्तर: संसाररूपी समुद्र में।

कण्ठं गता वा श्रवणं गता वा प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला ।
तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं रमेशगौरीशकथेव सद्यः ॥ ३२ ॥

मङ्गलवाक्य–यह प्रश्नोत्तर नाम की मणिरत्नमाला कण्ठ में अथवा कानों में जाते ही अर्थात् पठन और श्रवण करते ही लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु और उमापति भगवान् शङ्कर की कथा की तरह विद्वानों के चित्त में मनोहर आनन्दस्रोत की वृद्धि करे ॥ ६२ ॥

हरिः ॐ तत्सत् ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!! ।

॥ इति प्रश्नोत्तर मणि रत्नमाला संपूर्णम् ॥